सम्पादकीय

देश - विदेश

राष्ट्रीय

उदारीकरण एवं आर्थिक सुधार के महासूर्य का अस्त होना!

साल 1999 के आम चुनावों में दिल्ली की सात में छह सीटों पर तत्कालीन सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को करारी हार मिली थी। दक्षिण दिल्ली की इकलौती ऐसी सीट रही, जहां बीजेपी के विजय कुमार मल्होत्रा को जीत मिली थी। मल्होत्रा के सामने जिन्हें हार मिली थी, वे राजनेता मनमोहन सिंह थे। उन दिनों मैं दैनिक भास्कर के दिल्ली ब्यूरो में काम करता था। अखबारी रिपोर्टिंग की एक रवायत है। वह विजेताओं को ही खोजती है और उनकी ही बात करती है। लेकिन हमारे तत्कालीन ब्यूरो चीफ और दिग्गज पत्रकार शरद द्विवेदी ने मुझे सफदरजंग रोड भेज दिया, जहां मनमोहन सिंह बतौर राज्यसभा सांसद रह रहे थे। शरद द्विवेदी का तर्क था कि मनमोहन सिंह देश की अर्थव्यवस्था को बदलने वाले राजनेता हैं। उनके घर का माहौल देखना चाहिए और उस पर स्टोरी लिखनी चाहिए।

मैं जब मनमोहन सिंह के घर पहुंचा तो वहां करीब साठ-सत्तर कार्यकर्ता मौजूद थे। बंगले में एक तरह से उदासी छायी थी। एक ड्रम में रसना घोल रखी गई थी और आने वाले लोगों को पिलाई जा रही थी। वहां कांग्रेस का कोई बड़ा नेता मौजूद नहीं था, सिवा राजस्थान के रामनिवास मिर्धा के। मिर्धा भी चुपचाप एक कोने में खड़े थे। और तो और, वहां पत्रकार भी नहीं थे। मेरे पहुंचने के बाद बंगले में सिर्फ एक और पत्रकार आए। इस बीच साधारण से सफेद कुर्ता-पाजामा और नीली पगड़ी में मनमोहन सिंह मेरी तरफ मुखातिब हुए। उन्हें मैंने बतौर पत्रकार परिचय दिया तो उन्होंने कांपते हाथों से हाथ मिलाया और फिर उसी तरह तकरीबन कांपते हुए रसना का गिलास मुझे थमा दिया। उस वक्त मैंने बचकाना सा सवाल पूछ लिया था, क्या सोच रहे हैं? 'वैसा ही सोच रहे हैं, जैसा कोई हारा हुआ प्रत्याशी सोचता है।' उनका जवाब था। मनमोहन सिंह को उसके बाद राज्यसभा और दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में खूब देखा। वे कभी पढ़ते हुए दिखते तो कभी चुपचाप बैठे हुए। 2004 में भारतीय जनता पार्टी के इंडिया शाइनिंग अभियान को धत्ता बताते हुए कांग्रेस की अगुआई में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने केंद्रीय सत्ता का दावेदार बन गया। तब शायद ही किसी ने सोचा था कि मनमोहन सिंह अगले प्रधानमंत्री बनेंगे। उस वक्त माना यह जा रहा था कि अगर किसी वजह से सोनिया गांधी प्रधानमंत्री नहीं बन पाएंगी तो प्रणब मुखर्जी देश के अगले प्रधानमंत्री हो सकते हैं। लेकिन सोनिया गांधी ने प्रणब मुखर्जी की बजाय मनमोहन सिंह पर भरोसा किया।

1991 में जब नरसिंह राव ने केंद्र की सत्ता संभाली, तब देश भारी आर्थिक संकट से गुजर रहा था। देश की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि उसे विदेशी विनिमय के लिए अपना 67 टन सोना ब्रिटेन में गिरवी रखकर उसके एवज में 2.2 अरब डॉलर का कर्ज लेना पड़ा था। ऐसे माहौल में नई सरकार के लिए देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना बड़ी चुनौती थी। लेकिन नरसिंह राव ने इसे स्वीकार किया। उन्होंने मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनाया और मनमोहन सिंह ने उदारीकरण के साथ ही आर्थिक सुधारों की शुरूआत की। 1991 के चुनावों के बाद बनी नई सरकार ने 25 जुलाई 1991 को नया बजट पेश किया। उसी बजट को पेश करते हुए बतौर वित्त मंत्री देश को नई आर्थिक राह पर लेकर चल पड़े। उदारीकरण, वैश्वीकरण और आर्थिक सुधार के साथ देश आर्थिक मोर्चों को फतह करते हुए आगे बढ़ चला। इस राह पर देश आज कितना आगे बढ़ चुका है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है। देश का आज आर्थिक नक्शा बदला हुआ नजर आता है तो उसकी बड़ी वजह मनमोहन सिंह की रखी हुई बुनियाद ही है। मनमोहन सिंह को अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री के रूप ही याद किया जाता है। लेकिन प्रधानमंत्री को राजनेता भी होना चाहिए। मनमोहन आधुनिक और प्रचलित अर्थों में राजनेता नहीं थे। उनके ही मीडिया सलाहकार रहे संजय बारू ने उन्हें एक्सीडेंटल प्रधानमंत्री कहा है। मनमोहन सिंह पर आरोप लगा कि वे कठपुतली प्रधानमंत्री हैं। उनकी सरकार को सलाह देने के लिए सोनिया गांधी की अगुआई में राष्ट्रीय सलाहकार परिषद बनी, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह सलाहकार कम, आदेश देने वाली संस्था है। उनकी ही सरकार ने तीन साल की सजा पाने वाले राजनेताओं की संसद और विधानमंडल की सदस्यता खत्म होने को रोकने वाला अध्यादेश पारित किया था, जिसे राहुल गांधी ने फाड़ कर एक तरह से उस अध्यादेश को प्रभावहीन कर दिया था।

अंतर्राष्ट्रीय

शिकागो मैराथन देख आया ख्याल, क्यों न अपने गांव में कुछ ऐसा किया जाए

कहते हैं, पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी पहाड़ के काम नहीं आती मगर अमेरिका के शिकागो में रह रहे विक्रम नेगी ने साबित कर दिया है कि जवानी में मौका न मिला तो क्या, आप बुढ़ापे की दहलीज पर आकर भी पहाड़ के लिए कुछ कर सकते हो। 65 साल के विक्रम नेगी दशकों पहले अमेरिका में बसने के बाद भी उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल के अपने गांव कल्वाड़ी के लोगों के साथ मिलकर हर साल मैराथन का आयोजन करवा रहे हैं। इसमें जीतने वालों को अच्छी खासी रकम तो मिलती ही है, पुरुष और महिलाओं दोनों के लिए रेस रखी जाती है।

विक्रम नेगी बताते हैं, कल्वाड़ी मैराथन साल में एक बार होती है। इस बार 12 जनवरी को होगी। ठेठ पहाड़ी इलाके में होने वाली इस मैराथन में 16 साल या उससे ऊपर के लोग हिस्सा ले सकते हैं। पुरुषों के लिए 12 किलोमीटर और महिलाओं के लिए 6 किलोमीटर की रेस होती है। इसमें हिस्सा लेने के लिए प्रतिभागी की उत्तराखंड की रिहाइश होनी जरूरी है। प्रथम विजेता को 51 हजार रुपये का पुरस्कार मिलता है जबकि इसके अलावा नौ अन्य लोगों को भी पुरस्कार मिलता है। अब तक का एक्सपीरियंस कैसा रहा, इस सवाल पर विक्रम बताते हैं, पिछली बार 300 से लेकर 400 लोगों ने मैराथन में हिस्सा लिया था, जिनमें कई पेशेवर एथलीट भी थे। लोग पहाड़ी ही नहीं, देहरादून, रुड़की जैसे मैदानी इलाकों से भी इसमें भाग लेने आए थे। तब ज्यादातर लोग वॉट्सऐप के माध्यम से जानकारी पाकर आए थे। यह मैराथन का तीसरा साल है और इससे भी अच्छे रेस्पॉन्स की उम्मीद कर रहे हैं। उत्तराखंड से जुड़ी आपकी यादें किस तरह की हैं? इस सवाल पर विक्रम नेगी बताते हैं - आठवीं तक की पढ़ाई मेरी गांव में ही हुई। फिर शहर आकर बाकी की पढ़ाई पूरी की। यहां सरोजनी नगर में भी रहे। प्रतियोगी परीक्षा देकर सरकारी सेवा में आया और 1995 में जॉब छोड़कर अमेरिका में बसने का फैसला किया। पहाड़ी गांव में मैराथन का आइडिया कैसे आया, क्या सोच थी इसके पीछे, इस सवाल पर विक्रम नेगी बताते हैं - 1977 में जब मैं सरोजिनी नगर में रहता था, तब से ही रनिंग कर रहा हूं। मेरे दादाजी स्वर्गीय केशर सिंह नेगी ने दिल्ली के प्रतिष्ठित गढ़वाल हीरोज फुटबॉल क्लब को शुरू किया था। यूएस में बसा तो दुनिया की सबसे बड़ी मैराथन में से एक शिकागो मैराथन में दो बार मैंने हिस्सा लिया। यूएस में रहकर देखा कि यहां पर लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए मैराथन, खेल प्रतियोगिताएं खूब की जाती हैं। यह लोगों को एक्टिव रखने और मेलजोल का अच्छा माध्यम है। यहीं से ख्याल आया कि क्यों न उत्तराखंड के पहाड़ों पर जहां कि मेरी पैतृक भूमि है, वहां खाली हो रहे गांवों में चहल-पहल बढ़ाने की कोशिश हो। इस मैराथन के बहाने ही गांव में लगभग हर घर के किवाड़ खुलते हैं। मैराथन के बहाने लोग अब गांव आ रहे हैं।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

लोहड़ी, जिसे लोहाड़ी या लाल लोई के नाम से भी जाना जाता है, एक ऐसा त्यौहार है जो मकर संक्रांति से बहुत करीब से जुड़ा हुआ है

लोहड़ी मकर संक्रांति से बहुत करीब से जुड़ा हुआ त्यौहार

लोहड़ी सर्दियों की फसलों की बुआई के मौसम के अंत का प्रतीक है और अच्छी फसल के मौसम का मार्ग प्रशस्त करती है । पंजाबी और हिंदू समुदाय कृषि समृद्धि और सर्दियों के मौसम से पहले बोई गई फसलों की भरपूर कटाई के लिए सूर्य देवता और अग्नि देवता से प्रार्थना करते हैं। उत्तर भारत का लोकप्रिय त्योहार, सर्दियों के संक्रांति के अंत और लंबे दिनों की शुरुआत का प्रतीक है। यह कृषि से भी संबंधित है और पंजाब में कटाई के मौसम का प्रतीक है। मकर संक्रांति से एक रात पहले उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों में लोहड़ी मनाई जाती है। यह एक लोकप्रिय भारतीय त्यौहार है जो सर्दियों की फसलों की कटाई के मौसम की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। हर साल, पौष के महीने में, मकर संक्रांति से एक दिन पहले - आमतौर पर 13 जनवरी को, विशेष रूप से पंजाब के लोगों द्वारा बहुत धूमधाम से लोहड़ी मनाई जाती है। यह त्यौहार देश के अन्य हिस्सों जैसे हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और जम्मू में भी लोकप्रिय है।

मूल रूप से, यह शीतकालीन संक्रांति से पहले की शाम को मनाया जाता था, लेकिन हाल के वर्षों में, इसे मकर संक्रांति से एक दिन पहले मनाया जाता है। लोहड़ी, जिसे लोहाड़ी या लाल लोई के नाम से भी जाना जाता है, एक ऐसा त्यौहार है जो मकर संक्रांति से बहुत करीब से जुड़ा हुआ है। लोहड़ी का त्यौहार पारंपरिक रूप से रबी की फ़सल की कटाई से जुड़ा हुआ है। यह गन्ने की फ़सल की कटाई का समय है। यहाँ तक कि पंजाबी किसान भी लोहड़ी (माघी) के बाद इसे वित्तीय नव वर्ष के रूप में देखते हैं। लोहड़ी के त्यौहार से तीन खाद्य पदार्थ जुड़े हुए हैं, रेवड़ी, मूंगफली और पॉपकॉर्न।

लोहड़ी का त्यौहार बेदाग फिजूलखर्ची का समय होता है। लोकगीत गाना, ढोल की धुन पर नाचना, भांगड़ा, गिद्दा और छज्जा करना, मक्की की रोटी और सरसों का साग खाना और अलाव के पास गजक, मूंगफली, तिलकुट, मुरमुरे, रेवड़ी, पॉपकॉर्न खाना लोहड़ी की कुछ लोकप्रिय रस्में हैं।

लोहड़ी का त्योहार कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

- यह त्योहार रबी की फसलों की कटाई और सर्दियों के खत्म होने का प्रतीक है।
- लोहड़ी के दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, जिसे शुभ माना जाता है।
- यह त्योहार फसल पकने और अच्छी खेती का प्रतीक है।
- लोहड़ी के दिन लोग भगवान सूर्य और अग्नि देव की पूजा करते हैं और उन्हें अच्छी फसल के लिए धन्यवाद देते हैं।
- लोहड़ी के दिन लोग एकजुट होकर सूर्य भगवान एवं अग्नि देव का पूजन कर उनका आभार प्रकट करते हैं।
- लोहडी के दिन अलाव जलाकर, आग के चारों ओर इकट्ठा होकर गाया और नाचा जाता है।
- लोहड़ी को किसानों का नववर्ष माना जाता है। लोहड़ी के दिन नवजात शिशु की भी धूमधाम से पहली लोहड़ी मनाई जाती है।

इतिहास: लोहड़ी का उल्लेख महाराजा रणजीत सिंह के लाहौर दरबार में आए यूरोपीय आगंतुकों द्वारा किया गया है, जैसे वेड जो 1832 में महाराजा से मिलने गए थे।

लोहड़ी की भारतीय उत्पत्ति: लोहड़ी की कई उत्पत्तियाँ हैं । लोहड़ी का मुख्य विषय यह विश्वास है कि लोहड़ी शीतकालीन संक्रांति का ज्ञानवर्धक उत्सव है। लोहड़ी की मुख्य विशेषता अलाव जलाना है। सर्दियों के संक्रांति त्योहारों में आग जलाना हमेशा से प्रचलित रहा है। इसका मतलब है लंबे दिनों की वापसी। लोहड़ी सिखों, हिंदुओं और जो भी इसका आनंद लेना चाहते हैं, वे मनाते हैं।

लोहड़ी समारोह: पंजाब में कई जगहों पर युवा और किशोर लड़के-लड़कियों के समूह लोहड़ी से 10 से 15 दिन पहले आस-पास के इलाकों में जाकर लोहड़ी की आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करते हैं। कुछ जगहों पर वे अनाज और गुड़ जैसी चीजें भी इकट्ठा करते हैं जिन्हें बेचा जाता है और बिक्री से मिलने वाली रकम को समूह में बाँट दिया जाता है। इस दिन लोग पतंग भी उड़ाते हैं और आसमान विभिन्न आकार और आकृति की बहुरंगी पतंगों जैसे 'तुक्कल', 'छाज', 'परी' से भर जाता है जिन पर हैप्पी लोहड़ी और हैप्पी न्यू ईयर संदेश लिखे होते हैं।

आध्यात्मिक लेख

पोंगल का उत्सव चार दिन का होता है। पोंगल के पहले दिन को भोगी पांडिगई के नाम से जाना जाता है, इस दिन घर की साफ सफाई करते हैं और बेकार के सामान को घर से निकालकर अलाव जलाते हैं और इंद्र देव की पूजा अर्चना करते हैं। पोंगल का दूसरा दिन सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है और इसे थाई पोंगल के नाम से जाना जाता है। इस दिन भगवान सूर्यदेव की पूजा अर्चना की जाती है। साथ ही करई पोंगल के पारंपरिक पकवान के साथ मनाया जाता है।

पोंगल फसल कटाई और संपन्नता के प्रतीक का उत्सव

पोंगल दक्षिण भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है और इस पर्व को बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। दक्षिण भारत में यह पर्व मुख्य रूप से तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और केरल में मनाया जाता है। मकर संक्रांति की तरह यह पर्व भी सूर्य के उत्तरायण का त्योहार है। इस समय फसल की कटाई जाती है और इसको लेकर खुशियां मनाई जाती हैं। पोंगल का पर्व 4 दिन तक मनाया जाता है, इस साल पोंगल पर्व की शुरुआत 15 जनवरी से हो रही है और इसका समापन 18 जनवरी को होगा। आइए जानते हैं पौंगल कैसे और क्यों मनाता हैं। पोंगल का पर्व चार दिन तक मनाया जाता है। मान्यता है कि पोंगल के दिन से ही तमिल नववर्ष की शुरुआत हो रही है।

कैसे मनाते हैं पोंगल?

पोंगल का उत्सव चार दिन का होता है। पोंगल के पहले दिन को भोगी पांडिगई के नाम से जाना जाता है, इस दिन घर की साफ सफाई करते हैं और बेकार के सामान को घर से निकालकर अलाव जलाते हैं और इंद्र देव की पूजा अर्चना करते हैं। पोंगल का दूसरा दिन सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है और इसे थाई पोंगल के नाम से जाना जाता है। इस दिन भगवान सूर्यदेव की पूजा अर्चना की जाती है। साथ ही करई पोंगल के

पारंपरिक पकवान के साथ मनाया जाता है। साथ ही फसल पर सूर्यदेव की कृपा रहे, इसके लिए विनती करते हैं।

पोंगल के तीसरे दिन को मट्टू पोंगल के रूप में जाना जाता है। इस दिन मवेशियों को सजाते संवारते हैं और उनकी पूजा व सेवा करते हैं क्योंकि फसल को जोतने में इनका प्रयोग किया जाता है।

पोंगल के चौथे और अंतिम दिन को कन्या पोंगल कहते हैं। इस दिन को कन्नुम की रस्म के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन गन्ने रखकर दूध, चावल, घी आदि चीजों से पकवान बनाकर इसका भोग सूर्यदेव को लगाया जाता है।

क्यों मनाते हैं पोंगल?

पोंगल फसल कटाई और संपन्नता के प्रतीक का उत्सव होता है। पोंगल के दिनों में घर के बाहर रंगोली बनाई जाती है और खेत में उगी चीजों से सूर्यदेव को भोग लगाया जाता है। साथ ही यह पर्व ईश्वर को धन्यवाद देने के अवसर के रूप में भी मनाया जाता है। फसल की कटाई पर ईश्वर के प्रति आस्था प्रकट की जाती है, जिसमें उन्होंने हमे इस लायक बनाया कि हम आपस मिल जुलकर इस पर्व को मना सकें। पोंगल के पर्व में साफ सफाई, रंगोली, सजावट, ईश्वर से प्रार्थना के रूप में देखा जाता है। इस पर्व को लोग परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर उत्साह से मनाते हैं और खास बनाए गए पोंगल के प्रसाद का आनंद लेते हैं।